राजनीति विज्ञान

बी.ए.3 ईयर के छात्रों के लिए

प्रथम प्रश्न पत्र : लोक प्रशासन

"लोक प्रशासन का अर्थ, परिभाषा, विषय क्षेत्र एवं महत्व"

चरैवेति चरैवेति

महात्मा ज्योतिबा फुले
रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

प्रस्तुतकर्ता -

डॉ. नरेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय भोजपुर, मुरादाबाद

• लोक प्रशासन - अर्थ, परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र·

• वर्तमान में लोकप्रशासन एक महत्वपूर्ण अध्ययन के विषय के रूप में उभरा है· लोक प्रशासन, प्रशासन का वह भाग है, जो एक विशिष्ट राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत कार्य करता है· लोकप्रशासन का अर्थ जानने से पूर्व 'प्रशासन' का अर्थ जानना आवश्यक है·

• प्रशासन मूल रूप से – संस्कृत भाषा का शब्द है जो 'प्र' उपसर्ग के साथ 'शास्' धातु से बना है, इसका अर्थ होता है 'उत्कृष्ट रीति / तरीके से शासन करना·'

• प्रशासन ⇒ Administration ⇒ Ad + ministere (लैटिन)
लोगों की देख भाल करना / सेवा करना
कार्यों का प्रबंध करना·

इस प्रकार प्रशासन का मूल अभिप्राय एक व्यक्ति द्वारा दूसरे के हित की दृष्टि से उसकी सेवा का कोई कार्य करना·

प्रशासन की परिभाषा – "कार्यकलापों का ऐसा वर्ग, जिसमें वांछित लक्ष्यों या उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयोजन के लिए समन्वय और सहयोग अंतर्निहित है·"

• प्रशासन का अर्थ अत्यंत व्यापक है, जिसमें मुख्य रूप से इस प्रकार समझ सकते हैं–

> सामाजिक विज्ञान की शाखा के रूप में,
> मंत्रिमंडल या सरकार के पर्यायवाची के रूप में,
> प्रक्रिया के रूप में लोकनीति या क्रियात्मक कार्यवाई,
> सभी प्रकार के प्रबंध के रूप में·

- इस प्रकार प्रशासन एक सुनिश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए व्यक्तियों द्वारा परस्पर सहयोग से की जाने वाली क्रिया है।

प्रशासन – में उत्कृष्ट तरीके से शासन का अर्थ – एक अनुशासन के अंतर्गत व्यक्तियों द्वारा विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहयोग और संगठित ढंग से किया जाने वाला कार्य है।

- साइमन के अनुसार – प्रशासन उन समस्त क्रियाओं को कहा जाता है, जो सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सहयोगात्मक रूप में की जाती है • फिफनर – मनुष्य तथा भौतिक संसाधनो का नियंत्रण ही प्रशासन है। • निग्रो के अनुसार – प्रशासन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य तथा सामग्री दोनों का संगठन है • व्हाइट – प्रशासन किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यक्तियों के निर्देश, नियंत्रण तथा समन्वयीकरण की कला है।
- लूथर गुलिक – प्रशासन का संबंध कार्यों को संपन्न कराने से है, जिससे निर्धारित लक्ष्य पूरे हो सके।

- प्रशासन की परिभाषाओ से स्पष्ट है कि –

"एक से अधिक व्यक्तियों का परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करना।"

"किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला कार्य"

"प्रशासन की सफलता "संगठित' होकर कार्य करने पर निर्भर करती है"

लोक प्रशासन का अर्थ-

- लोकप्रशासन – प्रशासन का महत्वपूर्ण भाग है. यह 'लोक' तथा 'प्रशासन' दो शब्दों से मिलकर बना है. इसका अर्थ होता है – सार्वजनिक या सारी जनता के हितों से संबंधित सरकारी प्रशासन. इस प्रकार "लोक प्रशासन" का विषय इसे 'सरकार' या 'गवर्नमेंट' के कार्यों तक सीमित कर देता है.

"लोकप्रशासन से आशय जनहित में किए गये उन समस्त क्रियाकलापों से है, जो प्रशासकीय अधिकारियों द्वारा नियंत्रण, निर्देशन तथा प्रबंधन (control, Direction, management) के रूप में किए जाते हैं"

- देश की सुरक्षा, शांति तथा व्यवस्था से लेकर वर्तमान लोक हितकारी राज्यों के द्वारा किए गये समस्त लोकहित के कार्य प्रशासन से संबंधित हैं। प्रारंभ से लेकर आज तक के मानव जीवन को व्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए किसी न किसी प्रकार के व्यवस्था तथा नियंत्रण की आवश्यकता रही है.

- वर्तमान में लोककल्याणकारी राज्य की संकल्पना के बाद लोकप्रशासन का महत्व तथा कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है, इसलिए इसका एक पृथक अनुशासन या अध्ययन के विषय के रूप में महत्व भी बढ़ गया है.

- लोकप्रशासन का सार्वजनिक पहलू इसे विशेष स्वरूप प्रदान करता है. और एक प्रकार से लोकप्रशासन का आशय 'सरकारी प्रशासन' से है, जिसमें सार्वजनिक अधिकारी तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है.

परिभाषाएं -

- विद्वानों द्वारा लोकप्रशासन की परिभाषा व्यापक और संकुचित दोनो अर्थों में की गई है. व्यापक रूप में लोकप्रशासन का क्षेत्र संबंधित सरकार के तीनो अंगों, व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका द्वारा किये जाने वाले कार्यों से संबंधित है, जबकि संकुचित अर्थ में इसका प्रयोग केवल कार्यपालिका द्वारा किये गये कार्यों के संबंध में किया जाता है.

- <u>संकुचित अर्थ में -</u>

लूथर गुलिक - लोकप्रशासन प्रशासकीय विज्ञान का वह भाग है जो सरकार के कार्य से संबंधित है, इसका संबंध कार्यपालिका शाखा से है, जो सरकार के कार्यों को क्रियान्वित करती है, यद्यपि प्रशासन से संबंधित समस्याएं व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका से भी संबंधित होती है.

साइमन - सामान्य प्रयोग के लोकप्रशासन का अभिप्राय उन क्रियाओं से है, जो केन्द्र, राज्य अथवा स्थानीय सरकारों द्वारा की जाती है.

ई.एन. ग्लैडन के अनुसार - लोकप्रशासन का वास्तविक क्षेत्र सरकार के प्रशासनिक सेक्टर में पाया जाता है, जो सार्वजनिक मामलों के प्रबंध के प्रति उत्तरदायी होती है.

ये विचारक लोकप्रशासन के संकुचित अर्थ / दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं जिसके अनुसार - सरकार के केवल कार्यकारी दायित्वों से ही लोक प्रशासन संबंधित है.

व्यापक अर्थ में –

- एल. डी व्हाइट — लोकप्रशासन में वे सभी कार्य सम्मिलित हैं, जिनका उद्देश्य लोकनीतियों का कार्यान्वयन करना है।

- फिफनर — लोकप्रशासन का अर्थ है – सरकार का काम करना चाहे वह एक स्वास्थ्य प्रयोगशाला में स्करे मशीन को संचालित करना हो या टकसाल में सिक्के ढालने का।

- निग्रो — लोकप्रशासन का संबंध सरकार की तीनों शाखाओं विधायी, न्याय और कार्यकारी तथा इसकी पारस्परिक संबद्धता से है।

विशेष अर्थ में –

- वुडरो विल्सन — लोकप्रशासन का संबंध कानून / प्रशासनिक विधि के क्रमबद्ध रूप से क्रियान्वित करने से है।

- उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि लोक प्रशासन –
  - ✓ सार्वजनिक व्यवस्था में सहयोगात्मक सामूहिक प्रयास है।
  - ✓ इसमें सरकार की तीनों शाखाएं शामिल हैं लेकिन इसकी प्रवृत्ति केवल कार्यपालिका शाखा में केंद्रित होने की होती है।
  - ✓ लोकनीति की रचना और क्रियान्वयन के रूप में राजनीतिक प्रक्रिया का भाग है।
  - ✓ निजी प्रशासन से भिन्न होता है।
  - ✓ समाज की सेवा के क्रम में अनेक प्रकार के समूहों व संगठनों से घनिष्ठ रूप से जुड़ना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान में राज्य के कार्य और व्यापक उद्देश्यों के दृष्टिगत इसकी अर्थ व परिभाषाओं में भी बहुलता है तथा इसकी निश्चित परिभाषा करना कठिन है।

• लोकप्रशासन का क्षेत्र (Scope of Pub. Ad.)

• लोकप्रशासन का क्षेत्र बहुत ही व्यापक तथा गतिशील है, जिस कारण इसके क्षेत्र का निर्धारण कठिन है. लोक प्रशासन के अध्ययन क्षेत्र के संबंध मे विचारकों में पर्याप्त मतभेद भी है. लोकप्रशासन के क्षेत्र के संबंध मे 4 दृष्टिकोण प्रचलित हैं—

1. व्यापक दृष्टिकोण
2. संकुचित दृष्टिकोण
3. पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण
4. आधुनिक / लोककल्याणकारी दृष्टिकोण.

1. व्यापक दृष्टिकोण — लोकप्रशासन के व्यापक दृष्टिकोण के अंतर्गत सरकार के तीनो अंगो — विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के कार्यक्षेत्र को शामिल किया जाता है. जिसके द्वारा शासन के उद्देश्यो की पूर्ति की जाती है. कई विद्वानो जैसे — एल. डी व्हाइट, मार्क्स, बिलोबी, निग्रो, साइमन आदि ने लोकप्रशासन के क्षेत्र मे इसी व्यापक दृष्टिकोण को अपनाया है.

• लोकप्रशासन के विषय क्षेत्र के संबंध में निग्रो की परिभाषा/व्याख्या अधिक व्यापक है — लोकसमाज मे सहयोगी व सामूहिक प्रयास शासन के तीनों अंगों के संबंध शामिल लोकनीति मे भूमिका, राजनीतिक प्रक्रिया का भाग समाज की सेवा, निजी समूह व व्यक्तियोंसे जुड़ा. नीति-निर्धारण भी लोकप्रशासन का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है.

➤ व्यवहारिक रूप मे लोकप्रशासन के व्यापक क्षेत्र को नही अपनाया जा सकता, इससे इसका क्षेत्र अस्पष्ट हो जाता है.

2. संकुचित दृष्टिकोण –

• व्यवहार में लोक प्रशासन के संकुचित दृष्टिकोण को ही स्वीकार किया जाता है. इसके अनुसार लोकप्रशासन का संबंध, शासन की केवल कार्यपालिका शाखा से है. साइमन, लूथर गुलिक जैसे विचारक इसी धारणा के समर्थक हैं. संकुचित दृष्टिकोण के अंतर्गत – लोकप्रशासन में कार्यपालिका के संगठन, उसकी कार्यप्रणाली एवं कार्यपद्धति का अध्ययन किया जाना चाहिए.

इस दृष्टि से लोकप्रशासन के क्षेत्र के अंतर्गत शामिल हैं :–

1. लोक प्रशासन के अंतर्गत कार्यरत कार्यपालिका का अध्ययन किया जाता है.

२. लोक प्रशासन सामान्य प्रशासन की सभी समस्याओं से संबंधित होता है. इस भाग में प्रशासन की नीतियां, उनका निरीक्षण, निर्देशन तथा नियंत्रण से संबंधित कार्य शामिल होते हैं.

3. लोक प्रशासन इस बात का भी अध्ययन करता है कि विभिन्न प्रशासकीय क्रियाओं को संपन्न करने के लिए सेवाएं किस प्रकार संगठित की जाएं. अर्थात इसमें विभिन्न प्रकार के सेवाओं और संगठन का अध्ययन किया जाना चाहिए.

4. लोकप्रशासन के अंतर्गत प्रशासकीय उत्तर दायित्व, उनकी नियुक्ति, योग्यता तथा जनता के प्रति जवाबदेही का भी अध्ययन

5. लोकप्रशासन के अंतर्गत बजट, करारोपण एवं वित्त संबंधी प्रश्नों का अध्ययन.

6. इसके अतिरिक्त इसमें प्रबंध तथा साधन और उपकरण जुटाने का कार्य भी अध्ययन क्षेत्र में आना चाहिए.

3. पोस्डकोर्ब दृष्टिकोण –

- लोकप्रशासन के कार्यक्षेत्र के संबंध में लूथर गुलिक ने POSDCORB अवधारणा को अपनाया जिसका प्रत्येक अक्षर प्रशासन के निश्चित कार्य की ओर संकेत करता है. (अर्विक / फैयोल)

P – Planning – योजना बनाना
O – Organizing – संगठन बनाना
S – Staffing – कर्मचारियों की व्यवस्था करना
D – Directing – निर्देशन करना
Co – Coordination – समन्वय स्थापित करना
R – Reporting – रिपोर्ट करना
B – Budgeting – बजट तैयार करना.

- ये पोस्डकोर्ब क्रियाएं सभी संगठनो में की जाती हैं, प्रशासन का कोई भी क्षेत्र हो ये समस्याएं सभी में होती हैं इसलिए लोकप्रशासन के कार्यक्षेत्र में गुलिक का यह सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है.

- पोस्डकोर्ब की कई आलोचनाएं भी की जाती है. आलोचना का बिन्दु यह है कि इसका क्षेत्र यद्यपि विस्तृत है, परंतु कई दृष्टि से सीमित है. । इसमे – प्रशासन के महत्वपूर्ण कार्य जैसे नीति-निर्माण, मूल्यांकन और लोकसंपर्क जैसे कार्य शामिल नही है. इसके अलावा 'मेरियम' के अनुसार – इसके अंतर्गत पाठ्य विषय का ज्ञान शामिल नही है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसके अलावा प्रशासन में जनता की सुरक्षा, शांति-व्यवस्था, शिक्षा स्वास्थ्य के कार्य भी प्रशासन के कार्यक्षेत्र में आते है. इसके अलावा इस धारणा में मानव संबंध तथा संवेदना की उपेक्षा की गई है. क्योंकि प्रशासन का संबंध मानव तथा उसके कल्याण से है.

4. आधुनिक या लोककल्याणकारी दृष्टिकोण–

- लोकप्रशासन के इस क्षेत्र को आधुनिक – आदर्शवादी या लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण कहा जाता है। इस धारा या इस दृष्टिकोण के समर्थकों का मानना है कि – वर्तमान समय में राज्य का स्वरूप कल्याणकारी राज्य का हो गया है। ⇒ अतः लोकप्रशासन का क्षेत्र भी उसी के अनुरूप जनता के हित व कल्याण का होना चाहिए। "प्रशासन का मूल कर्तव्य जनता की सेवा करना है" यह दृष्टिकोण इसी विचार पर आधारित है। इस प्रकार लोक प्रशासन का क्षेत्र जनता के हित व जनकल्याण के समस्त कार्यों तक फैला हुआ है। 'एल॰ डी॰ व्हाइट' इसी कारण लोकप्रशासन को 'अच्छी जिंदगी' के लक्ष्य का साधन मानते हैं।
- वर्तमान में लोककल्याणकारी राज्यों के बढ़ते कार्यक्षेत्र के साथ ही लोकप्रशासन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। इस कारण लोकप्रशासन के अंतर्गत – केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय सभी स्तरों के सरकारों का अध्ययन किया जा रहा है।

स्पष्ट है कि बदलते परिदृश्य के अनुसार अन्य सामाजिक विज्ञानों का प्रभाव भी लोकप्रशासन पर पड़ा है। वर्तमान सूचना क्रांति और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में इसका कार्यक्षेत्र और विषयक्षेत्र लगातार बढ़ा है और एक गतिशील अध्ययन के विषय के रूप में स्थापित हुआ है। क्योंकि सरकारों के कार्य व दायित्व का दायरा जैसे-जैसे बढ़ रहा है, लोकप्रशासन के कार्यक्षेत्र व दायरे में भी विस्तार हो रहा है।

• लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन

- प्रशासन को सामान्य रुप से दो भागों में बांटा जा सकता है. — लोक प्रशासन और निजी प्रशासन. सार्वजनिक हित को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा किए जाने वाले प्रशासकीय कार्य, लोकप्रशासन के अंतर्गत, जबकि व्यक्तिगत तथा निजी हित को ध्यान में रखकर किसी गैर सरकारी संस्था द्वारा किये जाने वाले कार्य निजी प्रशासन कहलाता है.
- लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन के संबंध में दो दृष्टिकोण हैं, एक दृष्टिकोण इन दोनों में कोई अंतर नहीं मानता. दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार इन दोनों में पर्याप्त अंतर है.

- अनेक विचारक लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन में कोई भेद नहीं मानते क्योंकि दोनो के तौर-तरीको तथा पद्धतियों में पर्याप्त समानताएं हैं। दोनो के तौर तरीके एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं.

- अनेक विचारक जैसे – हेनरी फेयोल, मेरी पार्कर फालेट, तथा उर्विक, इन दोनों मे कोई अंतर नहीं मानते क्यों कि प्रशासन के मूल तत्व एक ही होते हैं, चाहे वह निजी या व्यक्तिगत प्रशासन हो या लोक प्रशासन.

लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन में समानताएं –

• लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन में बहुत सी बाते समान हैं; ये समानताएं किन आधारों पर हैं उसके बारे में जानते हैं–

1. संगठन की आवश्यकता
2. कार्यप्रणाली में समानता
3. निर्देशन, निरीक्षण तथा नियंत्रण
4. अधिकारियों के समान उत्तरदायित्व
5. जनसपर्क
6. शोध या अन्वेषण
7. नियोजन
8. समन्वय.

• वर्तमान परिस्थितियों में लोकप्रशासन तथा व्यवसायिक या वाणिज्यिक प्रशासन के कारण दोनो में अंतर्संबंध तथा परस्पर क्रियाएं होती हैं.

• कार्यालयों के प्रबंधन तथा आर्थिक तथा औद्योगिक संस्थाओ के क्षेत्र में लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन में काफी हद तक समानताएं हैं.

• इस प्रकार संगठन तथा प्रबंध संबंधी अनेक तकनीकों तथा पद्धतियों में समानता के कारण निजी तथा लोकप्रशासन में कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नही खींची जा सकती.

लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन में अंतर –

- कुछ समानताओं के होते हुए भी लोकप्रशासन तथा निजी प्रशासन में अनेक भिन्नताएं भी हैं –

1. उद्देश्य के आधार पर
2. लाभ का तत्व
3. जनता के प्रति उत्तरदायित्व
4. सेवा व सहयोग की भावना
5. राजनीतिक प्रभाव
6. आचार संहिताओं में भिन्नता
7. नौकरशाही तथा लाल फीता शाही
8. क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से
9. नियमानुसार कार्य
10. व्यवहार की एकरूपता
11. विलीय या बजट संबंधी अंतर
12. परिवेश व राज्य के प्रकार का प्रभाव.

- इन आधारो पर लोक प्रशासन व निजी प्रशासन मे पर्याप्त अंतर है.
- निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि लोकप्रशासन और निजी प्रशासन में पर्याप्त समानताएँ है और उनमे अंतर केवल मात्रा का है. नियोजन, संगठन, निर्देशन, समन्वय तथा नियंत्रण आदि के सिद्धान्तो में समानता के बावजूद, इन दोनों के उद्देश्य, क्षेत्र, उत्तरदायित्व तथा जनहित के आधार पर काफी अंतर है.

• लोकप्रशासन का महत्व

• आधुनिक काल में राज्य का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक तथा विस्तृत हो गया है, इस कारण लोकप्रशासन की भूमिका और महत्व और भी बढ़ गया है। लोककल्याणकारी राज्य के उदय और विकास के कारण, राज्य के कार्यक्षेत्र, जो कि कानून और व्यवस्था तक ही सीमित था, अब इसका क्षेत्र व्यापक और विस्तृत हो गया है।

• लोकप्रशासन आधुनिक राज्य का अनिवार्य तत्व है, और इसका महत्व दिनो-दिन बढ़ता जा रहा है। पिछली शताब्दी में राज्य का कार्यक्षेत्र व स्वरूप 'पुलिस राज्य' का था, परंतु वर्तमान में पुलिस राज्य का स्थान जनकल्याणकारी राज्य ने ले लिया है, राज्य के बढ़ते दायित्व और गतिविधियों के कारण लोकप्रशासन का महत्व भी बढ़ता जा रहा है।

• आधुनिक राज्य एक 'एडमिनिस्ट्रेटिव स्टेट' या प्रशासकीय राज्य हो गया है, जिसमें व्यक्ति के जीवन के सभी छोटे बड़े पक्ष लोकप्रशासन से संबंधित हो गये हैं, लोकप्रशासन का महत्व - जन्म से पूर्व व मृत्यु के उपरांत भी हो गया है।

• नीतियों के क्रियान्वयन का दायित्व लोकप्रशासन पर है, और किसी भी नीति की सफलता उसके उचित तथा कुशल क्रियान्वयन तथा लागू करने पर निर्भर होता है। (कुशलप्रशासक)

- प्रो० डोनहम के अनुसार – यदि हमारे सभ्यता का पतन होता है, तो ऐसा मुख्यत: प्रशासन की असफलता के कारण ही होगा.

- राज्य का सुचारु रूप से संचालन, सफल लोकप्रशासन पर ही निर्भर करता है. इस कारण वर्तमान युग को 'प्रशासनिक राज्य का युग' कहा जाता है.
  डिमॉक के अनुसार – प्रशासन प्रत्येक नागरिक के लिए महत्व का विषय है, क्योंकि जो सेवाएं उसे मिलती है, जो कर वह देता है, और जिन स्वतंत्रताओं का वह उपभोग करता है, प्रशासन के सफल और असफल कार्यकरण पर निर्भर करता है.

- चाहे कोई देश विकसित हो या विकासशील, लोकतंत्र हो या साम्यवादी, उसका भविष्य और सफलता इस बात पर निर्भर करता है कि वहां का लोकप्रशासन सक्षम, कुशल तथा दूरदर्शी है, अथवा नहीं.

- इन सबके अतिरिक्त लोकप्रशासन वर्तमान में 'सामाजिक – परिवर्तन' तथा 'सामाजिक - सुधार का जरिया बना हुआ है. वर्तमान में यह जिम्मेदारी लोकप्रशासन पर ही है. इस कारण राज्य की समस्त क्रियाकलापों की सफलता प्रशासन पर ही निर्भर करती है. इसके महत्व को जवाहरलाल नेहरू के अनुसार – लोकप्रशासन सभ्य जीवन का रक्षक मात्र ही नहीं, वरन सामाजिक न्याय तथा सामाजिक परिवर्तन का महान साधन है.

• लोकप्रशासन की भूमिका इन कारणों से और भी बढ़ रही है.

1. **लोकतंत्र के कारण** (उत्तरदायित्व)
2. **लोक कल्याणकारी राज्य** (व्यापक कार्यक्षेत्र)
3. **औद्योगीकरण** (प्रबंध व नियमन)
4. **आर्थिक नियोजन** (संसाधनों का समायोजन)
5. **बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय संबंध.** (वैश्विक अंतर्संबंध)

• इस प्रकार प्रशासन सभ्य समाज की प्रथम आवश्यकता है. इसलिए समाज में व्यवस्था - स्थिरता बनाये रखने में कुशल तथा दक्ष प्रशासन अत्यंत आवश्यक है. कुशल प्रशासन के अभाव में सरकार का कार्य कर पाना नितांत कठिन हो जाएगा.

• लोकप्रशासन के महत्व को ग्लैडन के इन शब्दों में देखा जा सकता है कि - " हम चाहें या न चाहें, आधुनिक युग में लोकप्रशासन हमारे लिए नितांत आवश्यक हो गया है. यह सभी लोगों के उत्तम जीवन के लिए भी आवश्यक है, और लोक प्रशासन का महत्व और भूमिका इसके अर्थ में निहित है - जनता की सेवा करना या उनका देखभाल करना; और यही इसका कार्य रहने देना चाहिए तथा सर्वाधिक फोकस भी इसी पर होना चाहिए.